मुफ्त

पुस्तकालय

एलिजाबेथ ब्राउन
ने जब इस दुनिया में प्रवेश किया
तो वो सीधी आसमान से नीचे गिरी.

एलिजाबेथ ब्राउन
ने जब इस दुनिया में प्रवेश किया
तब वो दुबली-पतली, कमज़ोर आँखों वाली
एक बेहद शर्मीली लड़की थी.

उसे गुड़ियों के साथ खेलना पसंद नहीं था
उसे स्केटिंग करना भी पसंद नहीं था
उसने बहुत कम उम्र में ही पढ़ना सीख लिया
ओर वो एकदम फर्राटे से पढ़ने लगी.

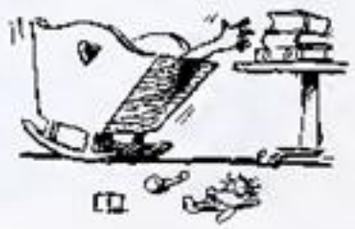

वो बिस्तर में भी किताबें पढ़ती थी
चादर के नीचे टॉर्च लेकर
वो चादर का तम्बू बनाती थी
फिर पढ़ते-पढ़ते खुद सो जाती थी.

एलिजाबेथ ब्राउन
जब स्कूल गई
तो साथ में एक संदूक खींचकर ले गई.

एलिजाबेथ ब्राउन
ने जब अपनी किताबें रखीं
तो उनके भार से दो-मंज़िला पलंग ही टूट गया.

वो सभी क्लासों में बैठे-बैठे
अपनी कॉपी में कुछ लिखती थी
वो सपने संजोती थी
पाठकों के एक ओलंपिक-मैच के बारे में.

वो लाइब्रेरी कार्ड बनाती
अपने दोस्तों को पुस्तकें उधार देती
फिर वो आधी रात को उनके घरों से
किताबों को इकट्ठा करती.

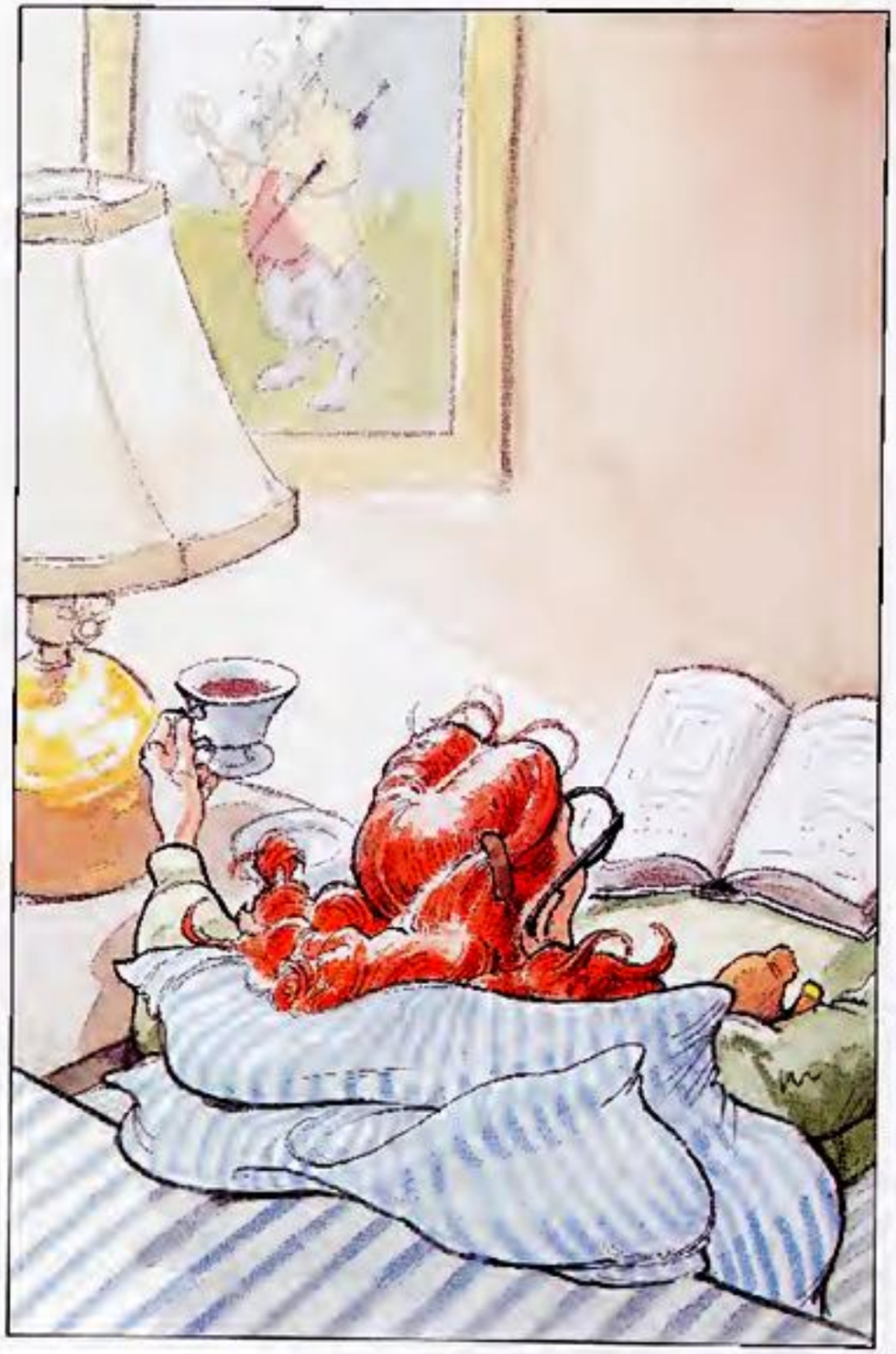

एलिजाबेथ ब्राउन
को सिर्फ किताबों से प्रेम था
उसके पास इश्क लड़ाने का समय नहीं था
जब उसके दोस्त बाहर जाते
और सुबह तक नाचते-गाते
तो वो देर रात तक पढ़ती थी.

एक दिन वो दोपहर को ट्रेन में चढ़ी
पर वो अपना रास्ता भूल गई,
फिर वो एक घर खरीदकर वहीँ बस गई
और ट्यूशन पढ़ाने लगी.

एलिजाबेथ ब्राउन
शहर में टहलती थी
गर्मी, पतझड़, सर्दी और वसंत में भी.

एलिजाबेथ ब्राउन
शहर में टहलती थी
सिर्फ एक चीज की तलाश में.

उसे आलू के चिप्स नापसंद थे
उसे नए कपड़ों से नफरत थी
वह सीधे किताबों की दुकान पर जाती
"क्या मैं वो किताब खरीद सकती हूँ?" वो कहती.

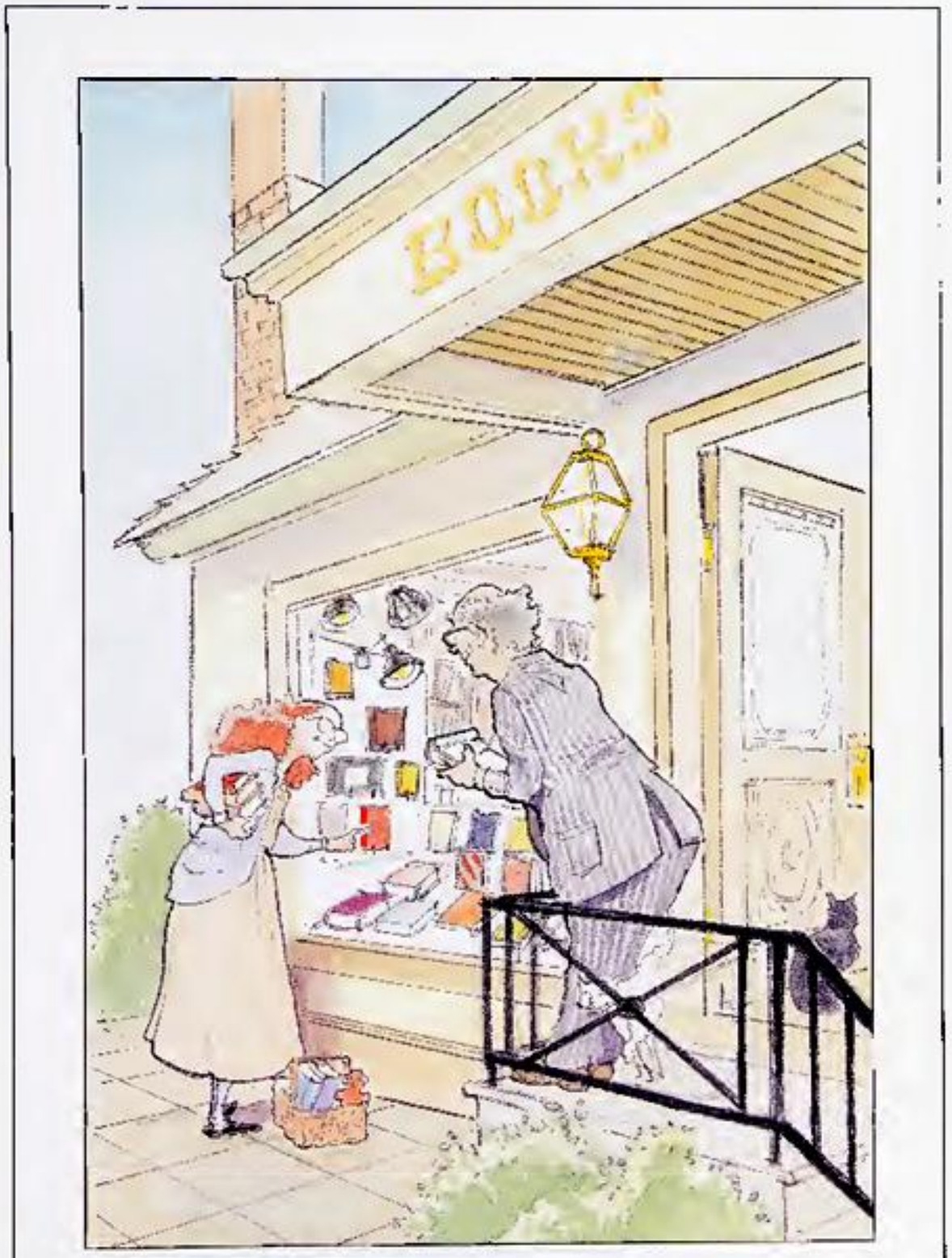

एलिजाबेथ ब्राउन
उन किताबों को लेकर सीधे घर जाती
और फिर आँख लगने तक उन्हें पढ़ती ही रहती.

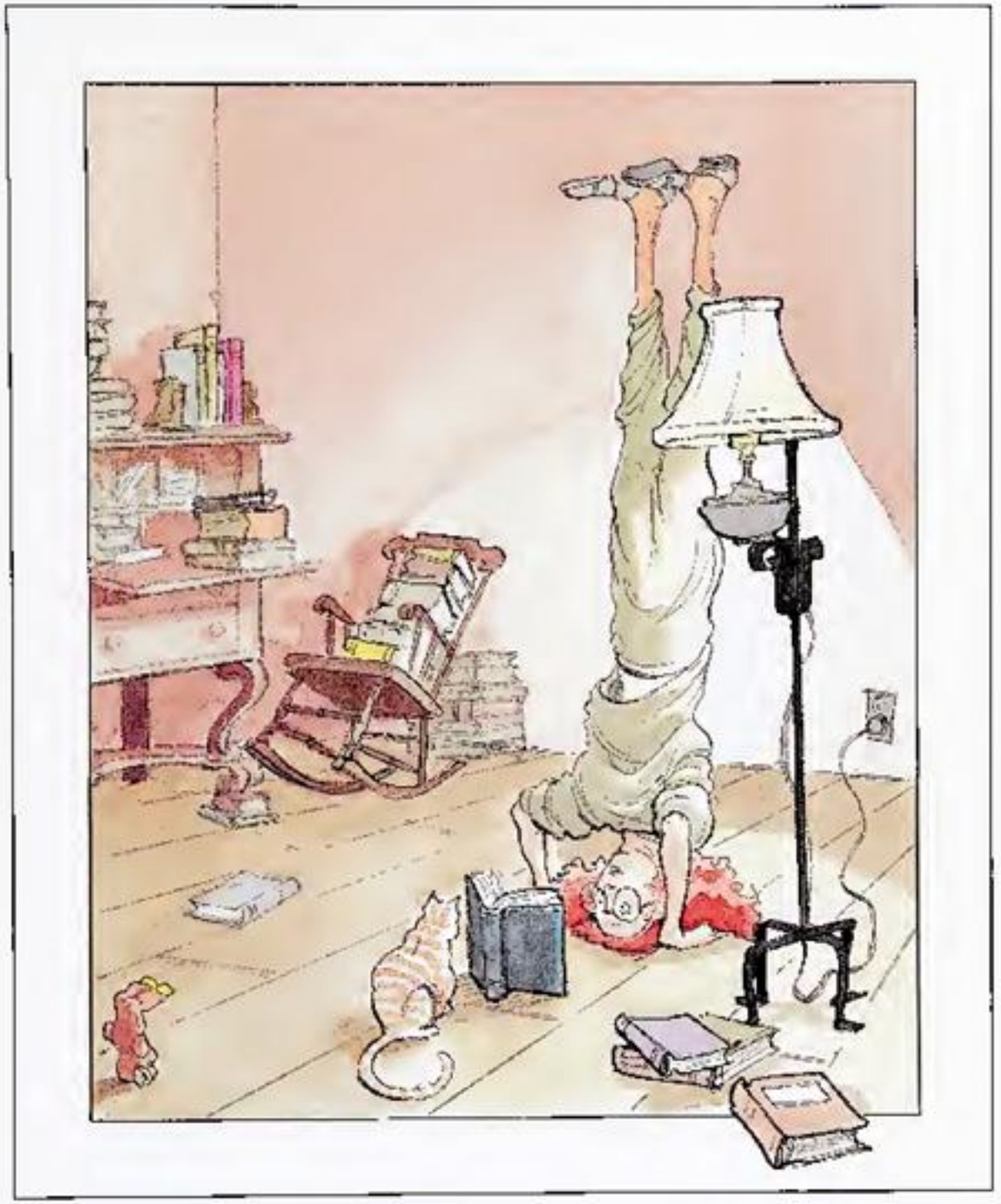

वो व्यायाम करते
समय भी किताबें पढ़ती
वो सिर के बल खड़े होकर भी किताबें पढ़ती.

उसने एक दिन किराने के सामान की सूची बनाई
फिर गलती से उसे अपनी किताब में रख दिया.
वो सूची, पन्नों के बीच कहीं खो गई
फिर उस दिन घर में खाना नहीं बना.

वो फर्श साफ़ करते समय भी
यूनानी देवी-देवताओं के बारे में पढ़ती थी
किताबें पढ़ते-पढ़ते
वो आसानी से चलती थी.

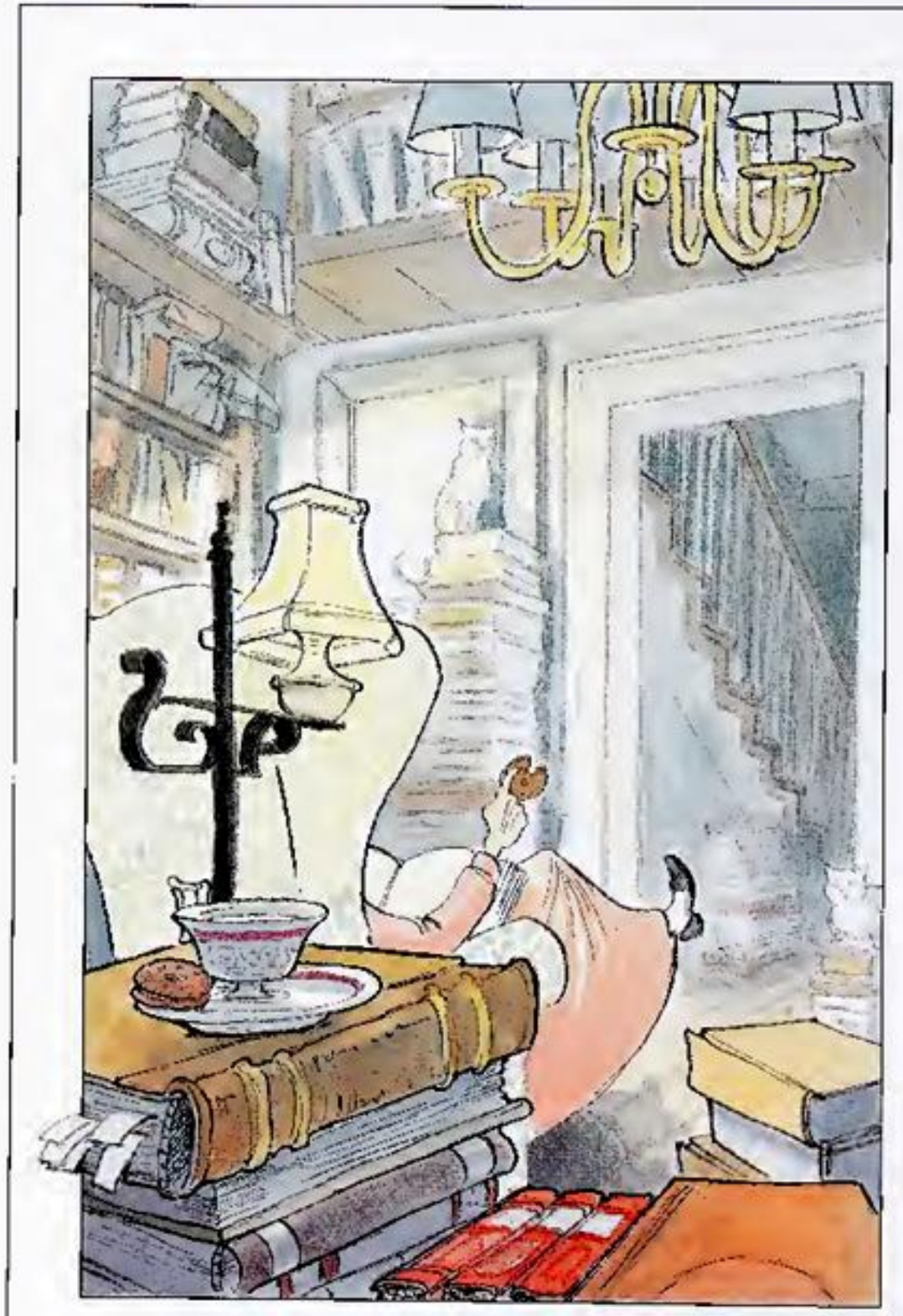

घर में पुस्तकों के ढेर थे
किताबें कुर्सियों पर और फर्श पर भी फैलीं थी
जैसे-जैसे वो और अधिक पढ़ती गई
वैसे-वैसे किताबों के भार से शेल्फ गिरने लगे.

बड़ी किताबों से एक मज़बूत ढेर बनता
जिन पर चाय के कप आराम करते
छोटी पुस्तकें, बिल्डिंग ब्लॉक्स का काम करतीं
व्यस्त और छोटे मेहमानों के लिए.

फिर किताबों की ढेरियां दीवारों पर चढ़ने लगीं
उन्होंने सामने के दरवाजे को ब्लॉक कर दिया,
तब उसे इस भयानक तथ्य का सामना करना पड़ा
कि अब वो और किताबें नहीं खरीद सकती थी.

एलिजाबेथ ब्राउन
फिर शहर गई
उसी दिन दोपहर को.

एलिजाबेथ ब्राउन
शहर गई
ख़ुशी की एक धुन गुनगुनाते हुए
उसे साइकिल नहीं चाहिए थी
उसे रेशम के रुमाल नहीं चाहिए थे
वो सीधे कोर्ट-कचेहरी में गई
"क्या मुझे "डोनेशन" वाला फॉर्म मिलेगा?"
उसने पूछा.

वो फॉर्म “दान” देने के लिए था
फिर उसने जल्दी से एक लाइन लिखी:
"मैं, एलिजाबेथ ब्राउन, शहर को
वो सब कुछ देना चाहती हूँ
वो कभी मेरा अपना था.”

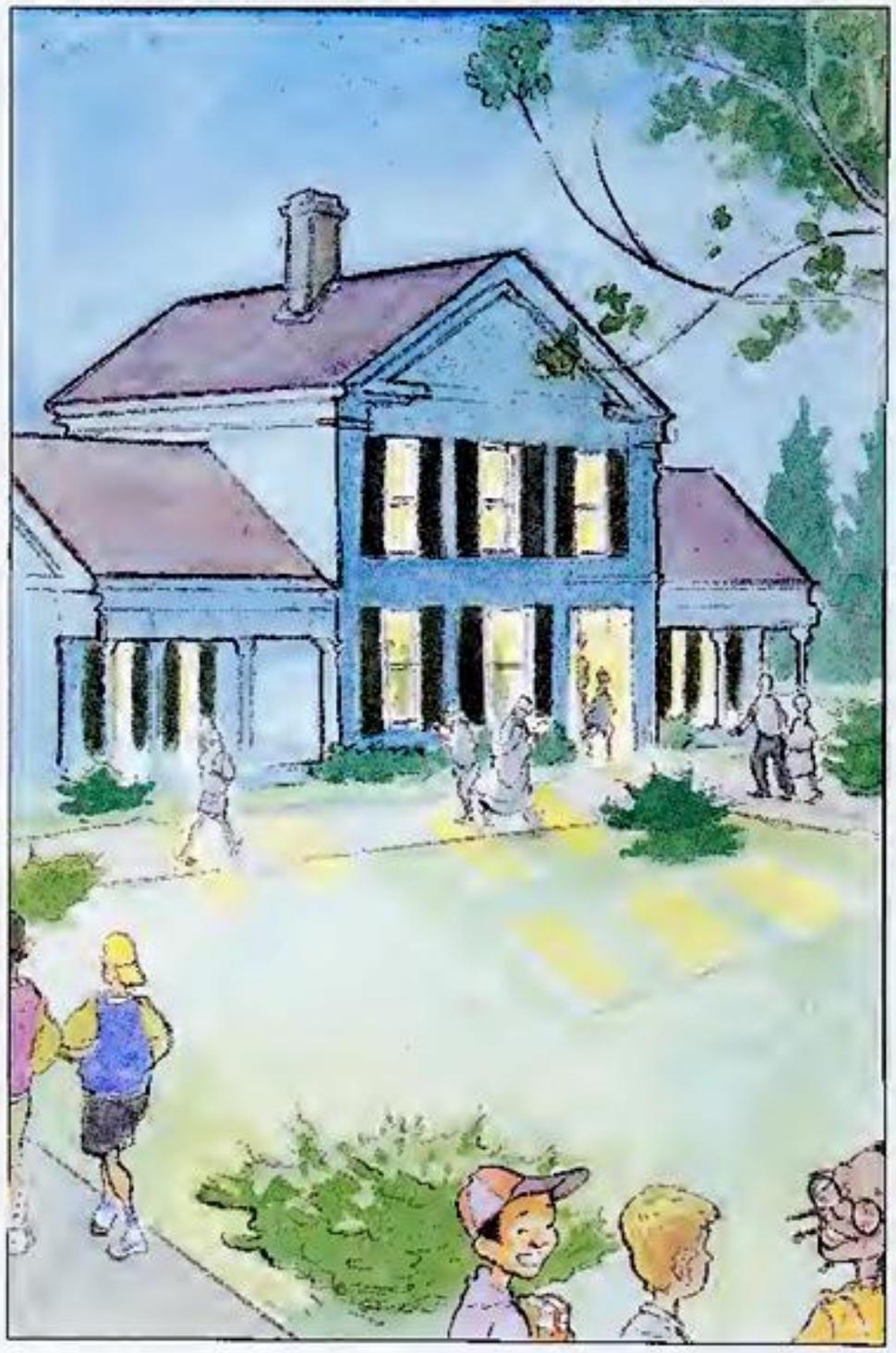

एलिजाबेथ ब्राउन
मुफ्त पुस्तकालय

उसके बाद एलिजाबेथ ब्राउन
अपने एक दोस्त के साथ रहने चली गई
वो एक लम्बी उम्र तक जीवित रही.

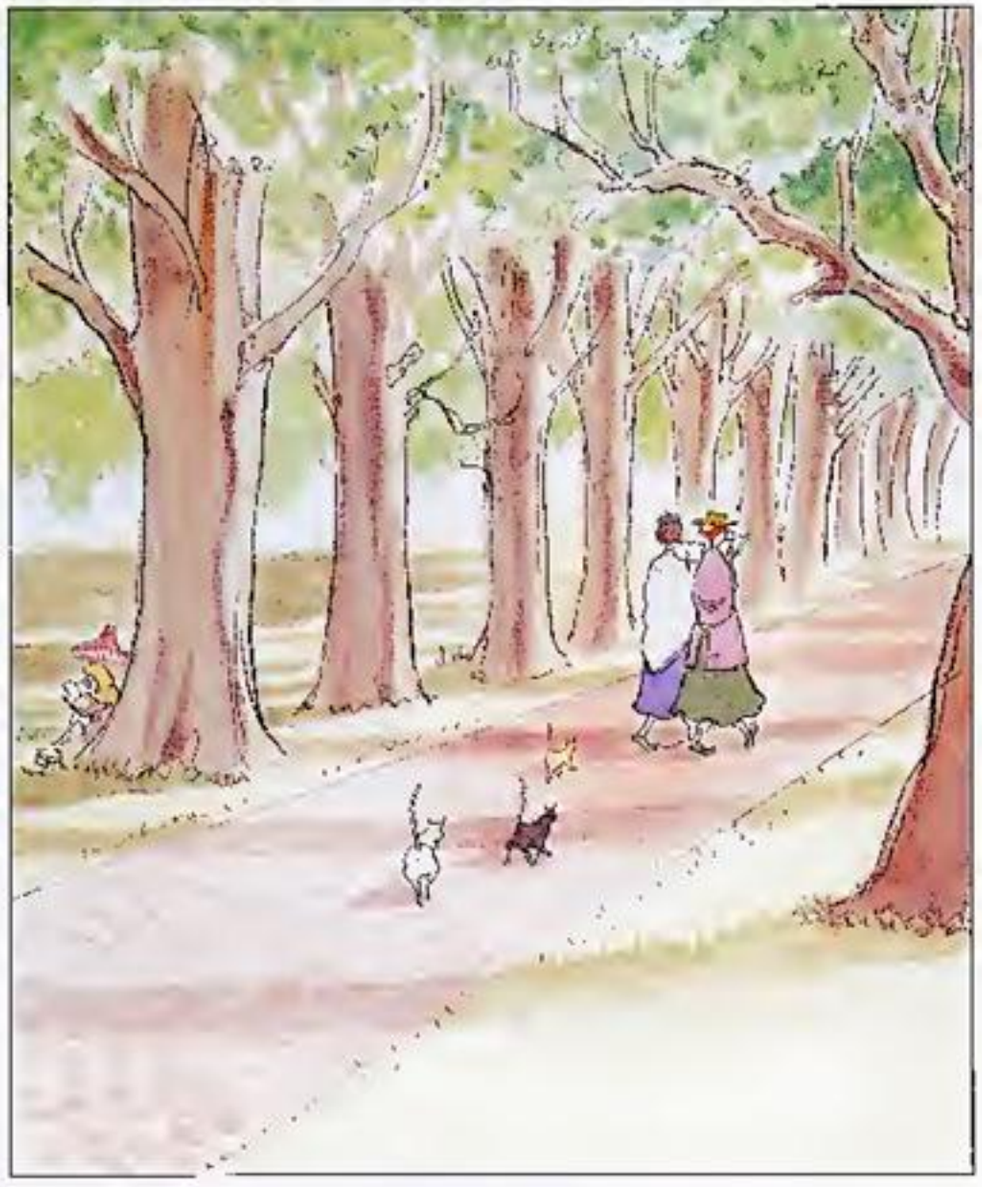

वो हर दिन, बिना नागे
पुस्तकालय में जाती
और किताबों के पन्ने पलटती ...
एक के बाद ...
एक के बाद,

एक करके .....

अंत